ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

असुर संहारिणी, कलंक मिटाने वाली..
मैं शिवशक्ति महाकाली हूँ..

POWER OF HAPPINESS

राजयोग से अष्ट शक्तियों की प्राप्ति तथा दिव्य गुणों की धारणा

सहन शक्ति

जब हम यह निश्चय करते हैं कि हम शान्त स्वरुप आत्मा हैं,शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा शिव की सन्तान है और शान्तिधाम के निवासी हैं तो हमारे द्वारा ऐसा कोई कर्म नहीं होगा जिससे अशान्ति फैले । इस निश्चय से सबसे पहले हमारे अन्दर सहन करने की शक्ति आती है । कोई व्यक्ति अगर गालियाँ देता है तो भी मैं अपनी शान्ति का गुण क्यों नष्ट करुँ ? एक बच्चा किसी आम के पेड़ को पत्थर मारता है लेकिन वह पेड़ उसके जवाब में बच्चें को फल देता है, एक जड़ वस्तु में इतना गुण है तो चैतन्य में तो इससे भी ज्यादा होना चाहिए । लेकिन आज का मनुष्य ईंट का जवाब पत्थर से देता है। राजयोगी इस सन्दर्भ रुप में सहनशील रहेगा क्योंकि वह जानता है कि दुसरा व्यक्ति अज्ञानता के कारण इस प्रकार का व्यवहार कर रहा है, परन्तु वह स्वयं तो ज्ञानवान है, अगर वह भी अज्ञानी के सदृश्य कर्म करे तो अज्ञानी और ज्ञानी में अन्तर ही क्या रहा ? वह स्वयं शान्तस्वरुप बन शान्ति का दान देगा,वैसे भी क्रोधी मनुष्य की बुध्दि में उस समय तो कोई बात बिठाई नही जा सकती है । तो राजयोगी सहनशक्ति को धारण कर उसकी बात मन में स्वीकार ही नहीं करता जो जवाब में कुछ कहना पडे़ । वैसे भी एक पत्थर हथौडी और छेनी की ठोकरें सहन करने के बाद ही तो पूज्यनीय मूर्ति बनता है । महान आत्माओं ने अपनी महानता सहनशक्ति के आधार पर ही तो प्राप्त की है, तो मैं शिवबाबा की सन्तान ने अगर सहन कर भी लिया तो कौनसी बडी बात हुई ? कोई भी व्यक्ति 9 बार सहन करके 10 वी बार सहन नहीं कर सके तो भी उसे सहनशील नही कहेंगे । इसलिए मुझे सहन करते ही जाना है ।

GET IT ON Google Play
Download App - Learn Rajyoga Meditation

यदि हम सरल चित्त जीवन जीने की कला सीख जाये... तो जीवन के अनेक विघ्न स्वत: ही खत्म हो जायेगे...। जो सरल चीत्त होते हैं... उनके विघ्न भी सरल होकर नष्ट हो जाते हैं...।

Vyarth Sankalpon Ka Paper

सदा फरमानबरदार उसको कहते हैं जो एक संकल्प भी बिगर फ़रमाँ के न करे। यह ग्रुप तो इसमें पास है ना। सदैव अपने को फरमानबरदार के स्वरूप में स्थित कर फिर कोई संकल्प करो। ऐसे जो सम्पूर्ण फरमानबरदार हैं वही सम्पूर्ण वफादार भी होते हैं। यह ग्रुप तो सम्पूर्णता के समीप है ना। सम्पूर्ण वफादारी किसको कहते हैं? वफादार का मुख्य गुण क्या होता है? उनका मुख्य गुण होता है जो अपनी भले जान चली जाये लेकिन हर वस्तु की सम्भाल करेंगे। तो कोई भी चीज़ व्यर्थ नुकसान नहीं करेंगे। अगर संकल्प, समय, शब्द और कर्म - इन चारों में से कोई को भी व्यर्थ गंवाते हो वा नुकसान के खाते में जाता है तो उसको क्या सम्पूर्ण वफादार कहेंगे? क्योंकि जब से जन्म लिया अर्थात् फरमानबरदार, आज्ञाकारी बने, ईमानदार बने हैं? एक छोटे से पैसे में भी ईमानदार होता है। तो जब से जन्म लिया है तब से मन अर्थात् संकल्प, समय और कर्म जो भी करेंगे वह बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ करेंगे। यह प्रतिज्ञा की? सर्व समर्पण हुए हो? तो यह सभी बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ हो गई। अगर ईश्वरीय सेवा की बजाय कहाँ संकल्प वा समय वा तन द्वारा व्यर्थ कार्य होता है तो उनको क्या कहेंगे? उनको सम्पूर्ण वफादार कहेंगे? यह नहीं समझना कि एक वा एक सेकेण्ड क्या बड़ी बात है। अगर एक नये पैसे की भी वफादारी नहीं तो उसको सम्पूर्ण वफादार नहीं कहेंगे। यह ग्रुप तो सम्पूर्ण फरमानबरदार, सम्पूर्ण वफादार है ना। ऐसे सम्पूर्ण वफादार, फरमानबरदार, ईमानदार, आज्ञाकारी ग्रुप को क्या कहेंगे? नमस्ते। नमस्ते के बाद फिर क्या होता है? बाप तो सम्पूर्ण आज्ञाकारी है। एक-दो को देख हर्षित हो रहे हो ना। संगमयुग के दरबार का यह श्रृंगार है। --11-09-1971

Achanak Aur Eveready

संजीवनी बूटी

बापदादा- 18.01.1997

बापदादा बहुत बच्चों की रंगत देखते हैं - आज कहेंगे बाबा, ओ मेरे बाबा, ओ मीठा बाबा, क्या कहूं, क्या नहीं कहूं ..... आप ही मेरा संसार हो, बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं और दो चार घण्टे के बाद अगर कोई बात आ गई तो भूत आ जाता है। बात नहीं आती, भूत आता है। बापदादा के पास सभी का भूत वाला फोटो भी है। देखो, एक यादगार भी भूतनाथ का है। तो भूतों को भी बापदादा देखते हैं - कहाँ से आया, कैसे आया और कैसे भगा रहे हैं। यह खेल भी देखते रहते हैं। कोई तो घबराकर, दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। फिर बापदादा को यही शुभ संकल्प आता है कि इनको कोई द्वारा संजीवनी बूटी खिलाकर सुरजीत करें लेकिन वे मूर्छा में इतने मस्त होते हैं जो संजीवनी बूटी को देखते ही नहीं हैं। ऐसे नहीं करना। सारा होश नहीं गंवाना, थोड़ा रखना। थोड़ा भी होश होगा ना तो बच जायेंगे।

OM SHANTI

OM-SHANTI

अपनी बात दूसरो तक पहुंचाने के लिए आवाज नहीं आचरण ऊंचा रखें।

-बी.के.शिवानी दीदी

ओम् शांति 🙏

You are a majestic soul who always wears a crown that is decorated with jewels of purity, self-respect, kindness, and peace.

Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website: www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW www.IshvariyaKhajana.BKhq.org